रात्रि क्लास 15'12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

यह है युध। जब बाप के बच्चे बनते हैं। बच्चे तो भिन्न2 प्रकार के हैं कोई हाथी है घोड़े सवार है। ऐसे भी नहीं हाथी घोड़ेसवार हार नहीं खाते हैं। सभी हार खाते हैं। खानी भी जरूर है क्योंकि याद भूल जाते हैं। यह बहुतजबरदस्त लड़ाई है। ऐसी लड़ाई है जिससे विश्व की बादशाही पाई जाती है। तो अपने ऊपर नजर रखनी होती है। एक तो किसको दुःख न देना है।। बाप समझाते हैं याद की यात्रा का चार्ट रखो। कोई कठिन नहीं हैं। अपनी मुखदी देखनी है। व्यापारी तो हो ही। व्यापार बाप से करते हो। बाप खुद कहते हैं जितना बाबा को याद करेंगे उतना सुख मिलेगा। आत्मा सतोप्रधान बनेगी। बापने समझाया है कुछ न कुछ कला कम होती जाती है। रोज जांच करनी है कोई को दुःख तो नहीं दिया। दैवी चलन रखनी है। मनसा वाचा कर्मणा कोई को दुःख नहीं देना है। वहां मन तक भी कोई दुःख देने की बात नहीं आवेगी। यहां रोकना होता है जो फिर स्थाई हो जाता है। बाप तो समझाते हैं टीचर है ना। जैसे बाप* मां होती है तो बच्चों की सम्भाल करते हैं। बाप डायरेक्शन देते हैं उनके कल्याण के लिये कान पकड़ो। श्रीमत पर किया ना। बहुत लिखते हैं बच्चों के लिये क्या करें। बाप समझाते हैं यह क्रोध नहीं। तुम उनका कल्याण करते हो। दिखाते हैं कृष्ण को उखल से बांधा। यह दृष्टान्त बनाया है ऐसी कोई बात वहां होती ही नहीं। अभी संगम की बात है। बहुत प्रकार की बातें बच्चे पूछते रहते हैं। हरेक के स्वभाव का मालूम पड़ता है। सम्पूर्ण कोई बना न है। कुछ न कुछअसम्पूर्णता का रहता है। एक बात तो रहती है बाबा की याद भूल जाते हैं। यह युध पिछाड़ी तक चलती रहेगी। चलन से मालूम पड़ जाता है। इसने हार खाई। इसने यह किया। युध बन्द तब होगीजब महाभारत लड़ाई लगेगी। तब रिजल्ट निकलेगी। अभी तुम फील करेंगे हम तो बहुत दूर हैं। रजिस्टर रखा जाता है ना। तो उनको मालूम पड़े। गुड भी लिखेंगे बेटर भी लिखेंगे वेस्ट भी लिखेंगे। वहां तो कब रजिस्टर होते ही नहीं। तो अपने ऊपर साक्षी हो नजर रखनी है। अपनी चलन को देखना चाहिए। सिर्फ दूसरों को देखने से अपना भूल जावेंगे। अपना भी देखना चाहिए। पढ़ाई में नम्बरवार तो होते ही हैं। कोई ऊपर कोई नीचे। बाबा कहते हैं हफ्ते2 पत्र तो लिखो। अपने हाथ से लिखो। कोई लिखते हैं फलाने का याद प्यार। बाबा नहीं मानता। फुर्सत न होवे तो पत्र लिखने को बाबा नहीं मानता। ऐसे बाप को तो कैसे भी लिखना चाहिए। इस समय स्वासों स्वास तो याद कर न सके। जितना हो सके याद करो। गस्सा न लगाना है। छिपकर कुछ करते हैं अपना ही सोणा नुकसान करते हैं। बच्चे को बाप के साथ सच्चा रहना चाहिए। सर्विस भी अनेक प्रकार की हैं। स्थूल सर्विस भी बहुत है। जैसी अवस्था वैसी रहनी करनी होती है। वह समय आवेगा जब कोई अछूत आ न सकेंगे। देहअभिमानी को अछूत कहा जाता है। तुम बच्चों को फीलिंग आती है सम्पूर्ण निर्विकारी यह देवतायें ही बनते हैं। वहां विकार होता ही नहींक्योंकि रावण राज्य नहीं। तो सम्पूर्ण जरूर बनना पड़े। अपने ऊपर जांच रखनी होती है। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध त्याग अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। पढ़ाई के समय टीचर भी जरूर याद आता है। पढ़ाई से तुम नई दुनिया में ऊंच पद पावेंगे। बाबा जानते हैं यह बच्ची कितनी सर्विस करती हैं। नम्बरवार तो हैं ना। जितना पुरुषार्थ करना चाहिए। तुम कहां भी सर्विस कर सकते हो। गांवों में भी सर्विस कर सकते हो। सर्विस बहुत सहज है एक अक्षर कहना है यह तुम्हारा फर्ज है। अभी तुम बच्चों को नालेज है माला बननी है। कल्प2 बाप आते हैं। ऐसे स्थापना होती है। प्रजा भी अभी बनती है। जितना पुरुषार्थ करते हैं ऐसी प्रजा भी बनती हैं। कल्प2 जो एक्टिविटी हुई हैजितना अच्छी2 सर्विस की हैउतना ऊंच पद जरूर पाते हैं। पहले तो अपने ऊपर नजर चाहिए। मैं कैसा पार्ट बजाता हूं। किसको दुःख तो नहीं देता हूं। कोई भी विकार है तो दुःख है। कोई करे तो भी क्या। जानते हो पार्ट पहले से ही बना हुआ है। आगे यह ज्ञान न था। तो भगवान को भी गाली दे देते थे। तुम बच्चों को अभी सारी नालेज मिलती है। कहां भी जाते हो बाप को याद जरूर करना है। दूसरों को भी याद कराना चाहिए। शिव बाबा याद है? लिख दो। तो ताकत आवेगी। किसको स्नान कराते हो। याद है? बाबा आप

रथ को स्नान कराती हूं। तो हरेक को एक दो को याद दिलाये उन्नति को पाना है। ऐसी अवस्था हो जाये जो खुशी खुशी से घर जाये। इस समय तुम जानते हो हमको घर जाना है जितना देवीगुण धारण करेंगे आप समान बनायेंगे। यह तो समझने की सहज बात है। स्कूल में भी समझते हैं यह कितने मार्कस से पास होंगे। तो इसमें भी सर्विस का सबूत देना है। बाप को पत्र भी लिखे नहीं तो बाबा को कैसे मालूम पड़े किसने किसको बनाया। जो किसको समझाते हैं वह लिख सकते हैं सभी को हक है पत्र लिखने का। देहअभिमानी जो होते हैं वह मना करते हैं। कहां मेरी रिपोर्ट न लिख दे। बाबा ब्राह्मणियों की अवस्था से रहनी करनी से समझते हैं। बाप को समाचार देने का हरेक को हक है। बाप को कैसे मालूम पड़े यह ब्राह्मण कैसी चल रही है। साधु सन्तों में कोई बहुतदेहअभिमानी होते हैं अपना ही बड़ा नशा रहता है। कोई भी बात में झटविगड़ पड़ेंगे। कोई धीर्य से सुनेंगे। कहेंगे कुछ अच्छा। कई तो झट कह देंगे यह उन्हों की कल्पना है। कल्पना का अर्थ कोई होता नहीं है। अपना ख्यालात से यह बनाया हुआ है। उन्हों की मत है। कोई से भी जास्ती बात नहीं करनी है। कोई भी साधु सन्यासी आवे। कुछ भी पूछेंगे। बोलो बाप को याद करो। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। हमेशा अंगुली से ईशारा करते हैं। उनको याद करो। यह नहीं जानते हैं याद करने से क्या फायदा। अर्थ कुछ नहीं जानते। तुम अर्थ जानते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे। परन्तु माया के युध है। जितना पुरुषार्थ तुम बच्चों ने कल्प कल्प किया है करते रहेंगे। भक्ति भी खास अमृत बेले तकरीर करते हैं। बाप कहते हैं पतित पावन एक ही है उनको याद करो। और कोई नहीं। स्वर्ग का मालिक बनाने वाला एक ही बेहद का बाप है। यह बड़ी जबरदस्त लाटरी है। कम नहीं समझना। अभी तुम बच्चों की बुधि में आता है कृष्ण विश्व का प्रिन्स था। कृष्ण और कृष्ण के बाप की अवस्था में फर्क तो होगा ना। कृष्ण की महिमा है बाप की महिमा नहीं है। वह सतोप्रधान पक्का योगी है। कहता हूं तुम जास्ती याद में रहते हो परन्तु यह भी जानता हूं हम दोनों इकट्ठे हैं। क्या बनते हैं। खुशी तो रहती है ना। हमको यह बनना है। पढ़ाने वाला बाप मिला है। फिर भी तकदीर में नहीं है तो तदबीर करते ही नहीं। माया किसको थोड़ा जीतती है कोई को बहुत जीतती है। पूरा हप कर लेती है। गज को ग्राहम पकड़ लेती है। कोई की टांग टूट पड़ती है कोई की क्या। यहां भी बच्चों को भिन्न2 प्रकार की चोटें लगती हैं। भूलने से कुछ न कुछ उल्टा काम कर लेते हैं। कहां भी घूमने जाओ, बाप को याद करते रहो। यहां तो बहुत फर्सत है। धंधा आदि है नहीं। सभी योगी रहते हैं तो योग से आत्मा पावन होती है। कोई भी छी छी याद बुधि में नहीं आवे। सुप्रीम शान्ति। फिर नाम ही रखेंगे टावर आफ सायलेन्स। जो टावर बनते हैं नम्बरवन तो वह जावेंगे। पिछाड़ी को तुम्हारी ऐसी अवस्था हो जावेगी बहुत ही खुशी से शरीर छोड़ेंगे। कहां यह शरीर छूटे तो बाबा के पास जावें। याद करते करते ही घर पहुंच जावेंगे। शरीर का भी भान न रहे। फिर कुछ दुःख न रहेगा। दुःख भी कर्मभोग है ना। इस लिये सर्प के खल का मिसाल देते हैं। देखते हैं नई तैयार हो गई है तो पूराने खल को छोड़ देते हैं। देरी नहीं लगती। तो तुमको भी ऐसे ही जाना है। एक शरीर छोड़ दूसरा धारण करना है। यह प्रेक्टीस होगी। सब ब्रह्मज्ञानी भी मौत समय याद में लग जावेंगे। तुम भी याद में रहते हो सच्ची2 याद की यात्रा। बाप सिखलाते हैं। तुमको तो बहुत खुशी होनी चाहिए। यहपद पाने का है। बाप बच्चों को कहते हैं ऐसे मीठे बाप को याद करो जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। और देवीगुण धारण करो। तुमको खुद फीलिंग आवेगी हमको सिवाय बाप के और कोई चीज नहीं याद पड़ता। बड़ी अडोल अचल रहेंगे। बापदादा अन्यन्य बच्चों की कोई फिक्र नहीं। अनेकवार बापसे वरसा लिया है तो पक्के खुशी में रहेंगे। निरन्तर याद बढ़ाते जावेंगे तुमको नालेज है ना। उसी समय के लिये कहते हैं अति ईन्द्रियसुख पूछना होतो .... टीचर स्टुडेन्ट समझ सकते हैं यह इतने नम्बर से पास होंगे। अच्छा पद पावेंगे। मूल बात है बाप को बहुतप्रीत से याद करना। प्रीतबुधि कितना फर्क पड़ता है पोजीशन में। विप्रीत और प्रीत की जैसे किरेस है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।